

ढोबळी मिरची / शिमला मिर्च

हायब्रिड्स/वाणः - वंडर -1

जमीन : या पिकाच्या लागवडीसाठी मातीचा पी.एच ६.० ते ६.५ दरम्यान असावा. मातीचा इ. सी १ एम.एस/सेमीपेक्षा जास्त नसावा. यासाठी आपण साइट निवडताच प्रथम मातीची तपासणी करून घ्यावी. माती अत्यंत सच्छिद्र असावी आणि चांगली निचरा होणारी हवी, जेणेकरून मुळाची वाढ चांगली होईल.

जमीन तयार करणे: तीन ते चार पाळ्या वखराच्या घेऊन जमीन भुसभुशीत करावी, 15-20 गाड्या कुजलेले शेणखत टाकून शेवटी वखराची पाळी करावी.

पेरणीची वेळ: बियाणे प्रामुख्याने ऑक्टोबर महिन्याच्या शेवटी पेरले जातात आणि फेब्रुवारीच्या मध्यात लावले जातात. लवकर उत्पादनासाठी, बियाणे ऑक्टोबर महिन्याच्या मध्यात पेरले जातात आणि नोव्हेंबरच्या अखेरीस लावले जातात.

अंतर: ओळी ते ओळी अंतर ५० सेमी आणि रोप ते रोप अंतर ४० सेमी वापरा.

पेरणीची खोली: खोली २-४ सेमी असावी. बियाण्याचा दर: एक एकर जमिनीसाठी २००-३०० ग्रॅम बियाण्याचा दर वापरा.

बीजप्रक्रिया: बियाणेजन्य रोगांपासून बचाव करण्यासाठी पेरणीपूर्वी बियाणे थायरम किंवा कॅप्टन, सेरेसन इत्यादींमध्ये २ ग्रॅम/किलो या प्रमाणात भिजवा.

नर्सरी व्यवस्थापन आणि पुनर्लागवड: शिमला मिरची शेतीसाठी, प्रथम रोपवाटिके रोपे वाढवली जातात. रोपे वाढविण्यासाठी ३०० x ६० x १५ सेमी आकाराचे गाडी वाफे तयार केले जातात. बियाण्यांची उगवण चांगली होण्यासाठी वाढत्या रोपवाटिकेत बियाणे पेरल्यानंतर हलके पाणी देणे आवश्यक आहे.

रोपांना ४-५ पाने झाल्यावर पुनर्लागवड केली जाते. तयार शेतात पुनर्लागवड केली जाते. ढगाळ हवामानात पुनर्लागवड प्रामुख्याने संध्याकाळी केली जाते.

रोपणीपूर्वी रोपवाटिकेत पाणी घाला जेणेकरून रोपे सहजपणे उपटता येतील.

खत व्यवस्थापन:

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

रोग व कीड नियंत्रण : खतासोबत फरटेरा (ड्रिपौंड) 4 किलो प्रति एकरी किंवा व्हर्टिको (सिजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकरी या दराने वापरल्यास सुमारे 21 दिवस मावा व तुडतुडे पासून चांगले संरक्षण मिळते.

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraxnose	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

सिंचन: बियाणे पेरणीनंतर लगेच हलके पाणी दिले जाते. त्यानंतर पुनर्लागवड झाल्यानंतर लगेचच पुढील पाणी दिले जाते आणि नंतर गरज पडल्यास पाणी दिले जाते. शुष्क आणि अर्ध-शुष्क प्रदेशात योग्य अंतराने पाणी देणे आवश्यक आहे..

तण नियंत्रण: तणांची वाढ नियंत्रित ठेवण्यासाठी तसेच मातीत वायुवीजन सुनिश्चित करण्यासाठी खुरपणी आणि कोळपणी सारखी आंतरमशागतीची कामे करा.

काढणी: ढोबळी मिरची फळांची काढणी प्रामुख्याने लागवडीनंतर ६५ ते ९० दिवसांनी सुरु होते.

टीप:- वरील सर्व माहिती आमच्या संशोधन केंद्रात केलेल्या प्रयोगावर आधारित आहे. वरील माहिती वेगवेगळ्या ठिकाणी वेगवेगळ्या हवामान, मातीचा प्रकार आणि ऋतूमुळे बदलू शकते.

शिमला मिर्च

हाइब्रिड/किस्में: वंडर -1

मिट्टी: इसकी खेती के लिए 18-35° सै. मिट्टी का तापमान होना आवश्यक है। इसके अच्छे विकास के लिए विभिन्न प्रकार की चिकनी से दोमट मिट्टी में इसकी खेती करें। यह कुछ हद तक तेजाबी मिट्टी में उगाई जा सकती है। यह रेतली दोमट मिट्टी और पानी के अच्छे निकास में बढ़िया परिणाम देती है। शिमला मिर्च की खेती के लिए मिट्टी का pH 6-7 होना चाहिए।

भूमि की तैयारी: शिमला मिर्च की खेती के लिए, ज़मीन को अच्छी तरह से तैयार करें। ज़मीन को भुरभुरा बनाने के लिए, 5-6 बार सुहागे से जोताई करें। खेत की तैयारी के समय खेत में रूड़ी की खाद डालें और मिट्टी में मिलाएं।

बिजाई का समय: बीजों को मुख्य तौर पर अक्टूबर के अंत में बोयें और रोपण के लिए मध्य-फरवरी का समय उचित होता है। जल्दी पैदावार के लिए, बीजों को मध्य-अक्टूबर में बोयें और रोपण के लिए नवंबर के अंत का समय उचित होता है। फासला: बिजाई के लिए पंक्ति से पंक्ति में 50 सें.मी. और पौधे से पौधे में 40 सें.मी. का फासला रखें। बिजाई की गहराई: बीज को 2-4 सें.मी. गहरा बोयें।

बीज की मात्रा: एक एकड़ खेत के लिए 200-300 बीजों का प्रयोग करें।

बीज का उपचार: मिट्टी से होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए बिजाई से पहले थीरम या कप्तान, सिरिसन आदि 2 ग्राम में प्रति किलो बीजों को भिगोएं।

नर्सरी : शिमला मिर्च की खेती के लिए, सबसे पहले नर्सरी बैडों को तैयार करें। नए पौधे लगाने के लिए 300 x 60 x 15 सें.मी. आकार के सीड बैड तैयार करें। बीजों को तैयार किये गए बैडों पर बोयें और बिजाई के बाद नर्सरी बैडों को मिट्टी की पतली परत से ढक दें। बीजों के उचित अंकुरण के लिए बिजाई के बाद तैयार बैडों पर हल्की सिंचाई करें। जब पौधे के 4-5 पत्ते निकलने शुरू हो जाये तो आरोपण करें। मुख्य खेत में आरोपण किया जाता है। आरोपण आमतौर पर बरसात के मौसम में किया जाता है। आरोपण के लिए मुख्यतः 50-60 दिनों की पौध का प्रयोग किया जाता है। आरोपण से पहले नर्सरी बैडों को पानी लगाएं ताकि पौधे को आसानी से उखाड़ा जा सके।

रासायनिक उर्वरकों के आवेदन की खुराक और अवधि

क्र.	रासायनिक खाद प्रति हेक्टेयर	नत्रजन (कि.ग्रा.)	फास्फोरस (कि.ग्रा.)	पोटाश (कि.ग्रा.)
1	रोपाई के 10-12 दिन बाद	50	50	50
2	30 दिन बाद	25	25	25
3	60 दिन बाद	25	00	00

साथ ही 50 किग्रा मैग्नीशियम सल्फेट + 25 किग्रा झिंक सल्फेट + 5 किग्रा बोरान प्रति हेक्टेयर का उपयोग करें।

रोग और कीट नियंत्रण

खाद के साथ फरटेरा (ड्रिप) 4 किलो प्रति एकड़ अथवा क्वार्टिको (सिंजेटा) 2.5 किलो प्रति एकड़ इस प्रमाण से एस्तेमाल करने से 21 दिन तक रस चुसानेवाले कीट से संरक्षण मिलता है।

क्र.	रोग/ कीट	दवा का नाम	मात्रा प्रति ली पाणी में
1	अर्थ्रकनोस	डायथेन एम 45	2.5 ग्राम प्रति ली
2	उखेड़ा रोग	कार्बेन्डाज़िम	01 ग्राम प्रति ली
3	पत्तों पर सफेद धब्बे	सल्फर	02 ग्राम प्रति ली
4	माहू/ थ्रिप्स	इमिडाक्लोरपीड	04 मि. ली प्रति 10 ली.
		एक्तरा	06 ग्राम प्रति 15 ली.
5	सफेद मक्खी	लैन्डो	02 मि. ली प्रति ली
		पेगासस	01 ग्राम प्रति ली
6	माईट	सल्फर	02 ग्राम प्रति ली
		मैजिस्टर	02 मि. ली प्रति ली.
7	फल छेदक	प्रोफेनोफॉस	01 मि. ली प्रति ली

सिंचाई: नियमित व सावधानीपूर्वक किया गया सिंचाई अच्छी उपज हेतु जरूरी है। रोपाई के बाद शुरूआती दिनों में नमी की कमी उपज में काफी कमी लाती है। दो सिंचाइयों के बीच का अंतराल मौसम व मृदा के प्रकार पर निर्भर करता है।

निकाई-गुड़ाई: निकाई-गुड़ाई के द्वारा खेत तो खरपतवारविहीन होते ही हैं, साथ ही इनके द्वारा प्रयोग होने वाले पोषक तत्व मिर्च के पौधों द्वारा उपयोग में लाये जाते हैं एवं इनके द्वारा होने वाले रोग व कीट से भी मिर्च का बचाव होता है। दो बार हाथ से निकाई व तीन बार गुड़ाई आवश्यक है। मिट्टी भी दो बार चढ़ाना उचित होता है।

फसल की कटाई: अपरिपक्व हरे फल कटाई के लिए तैयार होते हैं। अपरिपक्व फल नर्म और कुरकुरे कटाई के लिए बढ़िया होते हैं।

नोट:- उपरोक्त सभी जानकारी हमारे शोध केंद्र में किए गए प्रयोग पर आधारित है। उपरोक्त जानकारी अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग जलवायु, मिट्टी के प्रकार और मौसम के कारण अलग-अलग हो सकती है।

Capsicum

Hybrids/Varieties: - Wonder -1

Soil: It requires an ideal soil temperature between 18-35°C. It is grown in all type of soils ranging from clayey to loamy soil. It can also withstand in acidic soil to some extent. It gives best result when grown under sandy loam soil having high fertility and good drainage system. It requires pH ranging from 6-7 is best for capsicum.

Land preparation: For capsicum plantation, fields should be well prepared. To bring the soil to fine tilth, 5-6 ploughings followed by planking's must be done. At the time of land preparation FYM (Farm Yard Manure) or compost is mixed with the soil.

Time of sowing: Seeds are mainly sown in the end of the October month and transplanting is done in mid-February. For early yield, seeds are sown in the mid-October month and transplanting is done in end November.

Spacing: Use row to row spacing of 50 cm and plant to plant spacing of 40 cm.

Sowing depth: Depth should be 2-4 cm. **Seed rate:** Use seed rate of 200-300 gm for one acre of land.

Seed treatment: Soak the seeds in Thiram or Captan, Ceresan etc. @2gm/kg of seeds before sowing to prevent the crops from seed borne diseases.

Nursery Management And Transplanting: For capsicum farming, nursery beds are raised firstly. Seed beds of 300 x 60 x 15cm are prepared to raise seedlings. Seeds are sown in raised nursery beds and after sowing cover the nursery beds with thin layer of soil manure. Light irrigation is necessary after sowing the seeds in raising beds for optimum germination of seeds. Transplanting is done when seedlings attain 4-5 leaves. Transplanting is done in prepared fields. Transplanting is mainly done in evening during cloudy weather. Mainly 50-60 old seedlings are used for transplanting. Apply water to the nursery beds before transplanting so that seedling can be easily uprooted.

Dose and duration of application of chemical fertilizers

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

Also use 50 kg magnesium sulphate + 25 kg zinc sulphate + 5 kg boron per hectare.

Disease and Pest Control: Along with fertilizer, use Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre. This ratio gives protection from sucking pests for 21 days.

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthracoise	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

Weed Control: For good yield of crop, weeding must be done at proper intervals. Earthing up after 2-3 weeks of transplanting will help to remove weeds from the fields. First weeding is done after 30 days of transplanting then second weeding is done after 60 days of transplanting.

Irrigation: Light irrigation is given immediately after seed sowing. Then next irrigation is given immediately after transplanting, and then later irrigation is given when requires. In arid and semi-arid regions irrigation is required at proper intervals.

Harvesting: Green fruits which are immature are ready for harvesting. Immature fruits are soft and crispy which is good for harvesting.

Note:- All the above information is based on the experiment conducted at our research center. The above information may vary due to different climate, soil type and seasons at different places.

કેપ્સિકમ
હાઇબ્રિડ્સ/જાતી: - અજાયબી -૧

માટી: તેને ૧૮-૩૫° સેલ્સિયસ વચ્ચે આદર્શ માટીનું તાપમાન જરૂરી છે. તે માટીથી લઈને લોમી સુધીની તમામ પ્રકારની જમીનમાં ઉગાડવામાં આવે છે. તે અમુક અંશે એસિડિક જમીનમાં પણ ટકી શકે છે. ઉચ્ચ ફળદ્રુપતા અને સારી ડ્રેનેજ સિસ્ટમ ધરાવતી રેતાળ લોમ જમીનમાં ઉગાડવામાં આવે ત્યારે તે શ્રેષ્ઠ પરિણામ આપે છે. કેપ્સિકમ માટે તેને ૬-૭ સુધીનો pH જરૂરી છે.

જમીનની તૈયારી: કેપ્સિકમના વાવેતર માટે, ખેતરો સારી રીતે તૈયાર કરવા જોઈએ. જમીનને સારી રીતે ખેડાણ કરવા માટે, ૫-૬ ખેડાણ અને ત્યારબાદ પ્લેન્ડિંગ કરવું જોઈએ. જમીન તૈયાર કરતી વખતે FYM (ફાર્મ યાર્ડ ખાતર) અથવા ખાતર જમીનમાં ભેળવવામાં આવે છે.

વાવણીનો સમય: બીજ મુખ્યત્વે ઓક્ટોબર મહિનાના અંતમાં વાવવામાં આવે છે અને ફેબ્રુઆરીના મધ્યમાં રોપણી કરવામાં આવે છે. વહેલા પાક માટે, બીજ ઓક્ટોબર મહિનાના મધ્યમાં વાવવામાં આવે છે અને રોપણી નવેમ્બરના અંતમાં કરવામાં આવે છે.

અંતર: હરોળથી હરોળનું અંતર ૫૦ સે.મી. અને છોડથી છોડ ૪૦ સે.મી.નું અંતર વાવો.

વાવણીની ઊંડાઈ: ઊંડાઈ ૨-૪ સે.મી. હોવી જોઈએ. બીજ દર: એક એકર જમીન માટે ૨૦૦-૩૦૦ ગ્રામ બીજ દર વાવો.

બીજ માવજત: વાવણી પહેલાં બીજને થિરામ અથવા કેપ્ટન, સેરેસન વગેરેમાં ૨ ગ્રામ/કિલો બીજ પથારીમાં પલાળી રાખો જેથી પાકને બીજજન્ય રોગોથી બચાવી શકાય.

નર્સરી વ્યવસ્થાપન અને રોપણી: કેપ્સિકમની ખેતી માટે, સૌ પ્રથમ નર્સરી પથારી ઉગાડવામાં આવે છે. રોપાઓ ઉગાડવા માટે ૩૦૦ x ૬૦ x ૧૫ સે.મી.ના બીજ પથારી તૈયાર કરવામાં આવે છે. બીજ ઉભા કરેલા નર્સરી પથારીમાં વાવવામાં આવે છે અને વાવણી પછી નર્સરી પથારીને માટીના ખાતરના પાતળા સ્તરથી ઢાંકી દેવામાં આવે છે. બીજના શ્રેષ્ઠ અંકુરણ માટે ઉછેર પથારીમાં બીજ વાવ્યા પછી હળવી સિંચાઈ જરૂરી છે. રોપાઓ ૪-૫ પાન થાય ત્યારે રોપણી કરવામાં આવે છે. તૈયાર ખેતરમાં રોપણી કરવામાં આવે છે. મુખ્યત્વે વાદળછાયા વાતાવરણમાં સાંજે રોપણી કરવામાં આવે છે. મુખ્યત્વે ૫૦-૬૦ જૂના રોપાઓનો ઉપયોગ રોપણી માટે થાય છે. રોપણી પહેલાં નર્સરી બેડમાં પાણી નાખો જેથી રોપા સરળતાથી ઉખેડી શકાય.

રાસાયણિક ખાતરોના ઉપયોગની માત્રા અને અવધિ

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

રોગ અને જીવાત નિયંત્રણ: ખાતર સાથે, ફર્ટેરા (ડુપોન્ડ) ૪ કિલો પ્રતિ એકર અથવા વર્ટીકો (સિંજેન્ટા) ૨.૫ કિલો પ્રતિ એકર વાપરો. આ ગુણોત્તર ૨૧ દિવસ સુધી શોષક જીવાતોથી રક્ષણ આપે છે.

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraxnose	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

નીંદણ નિયંત્રણ: પાકના સારા ઉત્પાદન માટે, યોગ્ય અંતરાલે નીંદણ કરવું જોઈએ. રોપણી પછી ૨-૩ અઠવાડિયા પછી માટી કાઢવાથી ખેતરમાંથી નીંદણ દૂર કરવામાં મદદ મળશે. રોપણી પછી ૩૦ દિવસ પછી પ્રથમ નીંદણ કરવામાં આવે છે અને પછી ૬૦ દિવસ પછી બીજું નીંદણ કરવામાં આવે છે.

સિંચાઈ: બીજ વાવ્યા પછી તરત જ હળવું સિંચાઈ આપવામાં આવે છે. ત્યારબાદ રોપણી પછી તરત જ આગળનું સિંચાઈ આપવામાં આવે છે, અને પછી જરૂર પડે ત્યારે સિંચાઈ આપવામાં આવે છે. શુષ્ક અને અર્ધ-શુષ્ક પ્રદેશોમાં યોગ્ય અંતરાલે સિંચાઈ જરૂરી છે.

લણણી: લીલા ફળો જે અપરિપક્વ હોય છે તે લણણી માટે તૈયાર હોય છે. અપરિપક્વ ફળો નરમ અને કરકરા હોય છે જે લણણી માટે સારા છે.

નોંધ:- ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગ પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી વિવિધ સ્થળોએ વિવિધ આબોહવા, જમીનના પ્રકાર અને ઋતુઓને કારણે બદલાઈ શકે છે.

కాప్పికమ్
సంకరజాతులు/రకాలు: - వండర్ -1

నేల: దీనికి 18-35°C మధ్య ఆదర్శవంతమైన నేల ఉష్ణోగ్రత అవసరం. ఇది బంకమట్టి నుండి లోమి నేల వరకు అన్ని రకాల నేలల్లో పెరుగుతుంది. ఇది కొంతవరకు ఆల్లు నేలలో కూడా తట్టుకోగలదు. అధిక సారవంతమైన మరియు మంచి నీటి పారుదల వ్యవస్థ కలిగిన ఇసుక లోమి నేలలో పండించినప్పుడు ఇది ఉత్తమ ఫలితాన్ని ఇస్తుంది. కాప్పికమ్ కు 6-7 వరకు pH అవసరం.

భూమి తయారీ: కాప్పికమ్ తోటల పెంపకం కోసం, పొలాలను బాగా సిద్ధం చేయాలి. నేలను చక్కగా వడకట్టడానికి, 5-6 దున్నడం తరువాత పలకలు వేయడం చేయాలి. భూమిని సిద్ధం చేసే సమయంలో FYM (ఫామ్ యార్డ్ ఎరువు) లేదా కంపోస్టును మట్టితో కలుపుతారు.

విత్త సమయం: విత్తనాలను ప్రధానంగా అక్టోబర్ నెల చివరిలో విత్తుతారు మరియు నాల్గు ఫిబ్రవరి మధ్యలో వేస్తారు. ప్రారంభ దిగుబడి కోసం, విత్తనాలను అక్టోబర్ నెల మధ్యలో విత్తుతారు మరియు నవంబర్ చివరిలో నాల్గు వేస్తారు.

అంతరం: వరుస నుండి వరుసకు 50 సెం.మీ. అంతరం మరియు మొక్క నుండి మొక్కకు 40 సెం.మీ. అంతరం ఉపయోగించండి. విత్తే లోతు: 2-4 సెం.మీ. లోతు ఉండాలి. విత్తన రేటు: ఒక ఎకరం భూమికి 200-300 గ్రాముల విత్తన రేటు ఉపయోగించండి.

విత్తన శుద్ధి: విత్తనాలను విత్తే ముందు తిరామ్ లేదా క్లాస్, సెరెనాస్ మొదలైన వాటిలో @2 గ్రాములు/కిలో విత్తనాలను నానబెట్టండి, తద్వారా పంటలు విత్తనం ద్వారా సంక్రమించే వ్యాధుల నుండి నిరోధించబడతాయి.

నర్సరీ నిర్వహణ మరియు నాల్గు వేయడం: కాప్పికమ్ వ్యవసాయం కోసం, ముందుగా నర్సరీ పడకలను పెంచుతారు. మొలకల పెంపకానికి 300 x 60 x 15 సెం.మీ. విత్తన పడకలను సిద్ధం చేస్తారు. విత్తనాలను పెంచిన నర్సరీ పడకలలో విత్తుతారు మరియు విత్తిన తర్వాత నర్సరీ పడకలను పలుచని మట్టి ఎరువుతో కప్పాలి. విత్తనాల సరైన అంకురోత్పత్తి కోసం విత్తనాలను పెంచిన తర్వాత తేలికపాటి నీటిపారుదల అవసరం. మొలకల 4-5 ఆకులు వచ్చినప్పుడు నాటడం జరుగుతుంది. సిద్ధంగా ఉన్న పొలాలలో నాటడం జరుగుతుంది. మేఘవృతమైన వాతావరణంలో ప్రధానంగా సాయంత్రం వేళల్లో నాటడం జరుగుతుంది. ప్రధానంగా 50-60 పాత మొలకలని నాటడానికి ఉపయోగిస్తారు.

నాల్గు వేసే ముందు నర్సరీ పడకలకు నీరు పెట్టండి, తద్వారా మొలకలను సులభంగా వేరు చేయవచ్చు.

రసాయన ఎరువుల మోతాదు మరియు వ్యవధి

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

వ్యాధి మరియు తెగులు నియంత్రణ: ఎరువులతో పాటు, ఎకరానికి ఫెర్టెరా (డుపాండ్) 4 కిలోలు లేదా ఎకరానికి వెర్మిక్ (సింజెంటా) 2.5 కిలోలు వాడండి. ఈ నిష్పత్తి 21 రోజుల పాటు రసం పీల్చే తెగుల్లో నుండి రక్షణ కల్పిస్తుంది.

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthracoze	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

కలుపు నియంత్రణ: పంట మంచి దిగుబడి కోసం, సరైన వ్యవధిలో కలుపు తీయుట చేయాలి. నాల్గు వేసిన 2-3 వారాల తర్వాత భూమిని పైరు వేయడం వల్ల పొలాల నుండి కలుపు మొక్కలను తొలగించవచ్చు. నాల్గు వేసిన 30 రోజుల తర్వాత మొదటి కలుపు తీయుట జరుగుతుంది, ఆపై నాల్గు వేసిన 60 రోజుల తర్వాత రెండవ కలుపు తీయుట జరుగుతుంది.

నీటిపారుదల: విత్తనం నాటిన వెంటనే తేలికపాటి నీటిపారుదల ఇవ్వబడుతుంది. తరువాత నాల్గు వేసిన వెంటనే తదుపరి నీటిపారుదల ఇవ్వబడుతుంది, ఆపై అవసరమైనప్పుడు నీటిపారుదల ఇవ్వబడుతుంది. శుష్క మరియు పాక్షిక శుష్క ప్రాంతాలలో సరైన వ్యవధిలో నీటిపారుదల అవసరం.

కోత: పండని ఆకుపచ్చ పండ్లు కోతకు సిద్ధంగా ఉంటాయి. పండని పండ్లు మృదువుగా మరియు క్రీసీగా ఉంటాయి, ఇది కోతకు మంచిది.

గమనిక:- పైన పేర్కొన్న సమాచారం అంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగం ఆధారంగా రూపొందించబడింది. వివిధ ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణం, నేల రకం మరియు రుతువుల కారణంగా పైన పేర్కొన్న సమాచారం మారవచ్చు.

ಕ್ಯಾಪ್ಷಿಂ
ಹೈಬ್ರಿಡ್‌ಗಳು/ವೈವಿಧ್ಯಗಳು: - ವಂಡರ್ -1

ಮಣ್ಣು: ಇದಕ್ಕೆ 18-35°C ನಡುವಿನ ಆದರ್ಶ ಮಣ್ಣಿನ ತಾಪಮಾನದ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಇದನ್ನು ಜೇಡಿಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಹಿಡಿದು ಲೋಮಿ ಮಣ್ಣಿನವರೆಗೆ ಎಲ್ಲಾ ರೀತಿಯ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯಲಾಗುತ್ತದೆ. ಇದು ಸ್ವಲ್ಪ ಮಟ್ಟಿಗೆ ಆಮ್ಲೀಯ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿಯೂ ಸಹ ತಡೆದುಕೊಳ್ಳಬಲ್ಲದು. ಹೆಚ್ಚಿನ ಫಲವತ್ತತೆ ಮತ್ತು ಉತ್ತಮ ಒಳಚರಂಡಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಲೋಮ್ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದಾಗ ಇದು ಉತ್ತಮ ಫಲಿತಾಂಶವನ್ನು ನೀಡುತ್ತದೆ. ಕ್ಯಾಪ್ಷಿಂಗೆ 6-7 ರಿಂದ pH ಅಗತ್ಯವಿದೆ.

ಭೂಮಿ ತಯಾರಿಕೆ: ಕ್ಯಾಪ್ಷಿಂ ನೆಡುವಿಕೆಗಾಗಿ, ಹೊಲಗಳನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಬೇಕು. ಮಣ್ಣನ್ನು ಉತ್ತಮವಾದ ಓರೆಯಾಗಿಸಲು, 5-6 ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ ನಂತರ ಹಲಗೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಬೇಕು. ಭೂಮಿಯನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ FYM (ಫಾರ್ಮ್ ಯಾರ್ಡ್ ಗೊಬ್ಬರ) ಅಥವಾ ಕಾಂಪೋಸ್ಟ್ ಅನ್ನು ಮಣ್ಣಿನೊಂದಿಗೆ ಬೆರೆಸಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ: ಬೀಜಗಳನ್ನು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಅಕ್ಟೋಬರ್ ತಿಂಗಳ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಲಾಗುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ನಾಟಿ ಫೆಬ್ರವರಿ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಆರಂಭಿಕ ಇಳುವರಿಗಾಗಿ, ಬೀಜಗಳನ್ನು ಅಕ್ಟೋಬರ್ ತಿಂಗಳ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಲಾಗುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ನವೆಂಬರ್ ಅಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ನಾಟಿ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಅಂತರ: ಸಾಲಿನಿಂದ ಸಾಲಿಗೆ 50 ಸೆಂ.ಮೀ ಅಂತರ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯದಿಂದ ಸಸ್ಯಕ್ಕೆ 40 ಸೆಂ.ಮೀ ಅಂತರವನ್ನು ಬಳಸಿ.

ಬಿತ್ತನೆ ಆಳ: 2-4 ಸೆಂ.ಮೀ ಆಳವಿರಬೇಕು. ಬೀಜ ದರ: ಒಂದು ಎಕರೆ ಭೂಮಿಗೆ 200-300 ಗ್ರಾಂ ಬೀಜ ದರವನ್ನು ಬಳಸಿ.

ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ: ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬೀಜಗಳಿಂದ ಹರಡುವ ರೋಗಗಳಿಂದ ತಡೆಗಟ್ಟಲು ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವ ಮೊದಲು ಧಿರಾಮ್ ಅಥವಾ ಕ್ಯಾಪ್ಷಿನ್, ಸೆರೆಸನ್ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಲ್ಲಿ @ 2 ಗ್ರಾಂ / ಕೆಜಿ ಬೀಜಗಳಲ್ಲಿ ನೆನಸಿ.

ನರ್ಸರಿ ನಿರ್ವಹಣೆ ಮತ್ತು ನಾಟಿ: ಕ್ಯಾಪ್ಷಿಂ ಕೃಷಿಗಾಗಿ, ಮೊದಲು ನರ್ಸರಿ ಹಾಸಿಗೆಗಳನ್ನು ಬೆಳೆಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಸಸಿಗಳನ್ನು ಬೆಳೆಸಲು 300 x 60 x 15 ಸೆಂ.ಮೀ ಬೀಜ ಹಾಸಿಗೆಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬೆಳೆದ ನರ್ಸರಿ ಹಾಸಿಗೆಗಳಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಲಾಗುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ ನಂತರ ನರ್ಸರಿ ಹಾಸಿಗೆಗಳನ್ನು ತಳುವಾದ ಮಣ್ಣಿನ ಗೊಬ್ಬರದಿಂದ ಮುಚ್ಚಲಾಗುತ್ತದೆ. ಬೀಜಗಳ ಅತ್ಯುತ್ತಮ ಮೂಳಕೆಯೊಡೆಯುವಿಕೆಗಾಗಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಿದ ನಂತರ ಲಘು ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯ. ಸಸಿಗಳು 4-5 ಎಲೆಗಳನ್ನು ಪಡೆದಾಗ ನಾಟಿ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಸಿದ್ಧ ಹೊಲಗಳಲ್ಲಿ ನಾಟಿ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಮೋಡ ಕವಿದ ವಾತಾವರಣದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಸಂಜೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ನಾಟಿ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಮುಖ್ಯವಾಗಿ 50-60 ಹಳೆಯ ಸಸಿಗಳನ್ನು ನಾಟಿ ಮಾಡಲು ಬಳಸಲಾಗುತ್ತದೆ.

ನಾಟಿ ಮಾಡುವ ಮೊದಲು ನರ್ಸರಿ ಹಾಸಿಗೆಗಳಿಗೆ ನೀರನ್ನು ಹಾಕಿ ಇದರಿಂದ ಸಸಿಗಳನ್ನು ಸುಲಭವಾಗಿ ಬೇರು ಸಹಿತ ಕೀಳಬಹುದು.

ರಾಸಾಯನಿಕ ಗೊಬ್ಬರಗಳ ಪ್ರಮಾಣ ಮತ್ತು ಅವಧಿ

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 50 ಕೆಜಿ ಮೆಗ್ನೀಸಿಯಂ ಸಲ್ಫೇಟ್ + 25 ಕೆಜಿ ಸತು ಸಲ್ಫೇಟ್ + 5 ಕೆಜಿ ಬೋರಾನ್ ಅನ್ನು ಸಹ ಬಳಸಿ.

ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣ: ಗೊಬ್ಬರದ ಜೊತೆಗೆ, ಎಕರೆಗೆ ಫರ್ಟಿಲೈಸರ್ (ಡುಪಾಂಡ್) 4 ಕೆಜಿ ಅಥವಾ ಎಕರೆಗೆ 2.5 ಕೆಜಿ ವರ್ಟಿಕೋ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) ಬಳಸಿ. ಈ ಅನುಪಾತವು 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ನೀಡುತ್ತದೆ.

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraxnose	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ: ಉತ್ತಮ ಇಳುವರಿಗಾಗಿ, ಸರಿಯಾದ ಅಂತರದಲ್ಲಿ ಕಳೆ ತೆಗೆಯಬೇಕು. ನಾಟಿ ಮಾಡಿದ 2-3 ವಾರಗಳ ನಂತರ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಉದ್ದಿಸುವುದು ಹೊಲಗಳಿಂದ ಕಳೆಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ನಾಟಿ ಮಾಡಿದ 30 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಮೊದಲ ಕಳೆ ತೆಗೆಯಲಾಗುತ್ತದೆ ನಂತರ ನಾಟಿ ಮಾಡಿದ 60 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಎರಡನೇ ಕಳೆ ತೆಗೆಯಲಾಗುತ್ತದೆ.

ನೀರಾವರಿ: ಬೀಜ ಬಿತ್ತಿದ ತಕ್ಷಣ ಲಘು ನೀರಾವರಿ ನೀಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ನಂತರ ನಾಟಿ ಮಾಡಿದ ತಕ್ಷಣ ಮುಂದಿನ ನೀರಾವರಿ ನೀಡಲಾಗುತ್ತದೆ, ಮತ್ತು ನಂತರ ಅಗತ್ಯವಿದ್ದಾಗ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಶುಷ್ಕ ಮತ್ತು ಅರೆ-ಶುಷ್ಕ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಸರಿಯಾದ ಮಧ್ಯಂತರದಲ್ಲಿ ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯವಿರುತ್ತದೆ.

ಕೊಯ್ಲು: ಬಲಿಯದ ಹಸಿರು ಹಣ್ಣುಗಳು ಕೊಯ್ಲಿಗೆ ಸಿದ್ಧವಾಗಿವೆ. ಬಲಿಯದ ಹಣ್ಣುಗಳು ಮೃದು ಮತ್ತು ಗರಿಗರಿಯಾಗಿರುತ್ತವೆ, ಇದು ಕೊಯ್ಲಿಗೆ ಒಳ್ಳೆಯದು.

ಗಮನಿಸಿ: - ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿಭಿನ್ನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ವಿಭಿನ್ನ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿನ ಋತುಮಾನಗಳಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

কেপচিকাম
হাইব্ৰিড/জাত: - আচৰিত -১

মাটি: ইয়াৰ বাবে ১৮-৩৫ ডিগ্ৰী চেলছিয়াছৰ ভিতৰত আদৰ্শ মাটিৰ উষ্ণতাৰ প্ৰয়োজন হয়। মাটিৰ পৰা আৰম্ভ কৰি লোমিয়া মাটিলৈকে সকলো ধৰণৰ মাটিত ইয়াৰ খেতি কৰা হয়। অল্পযুক্ত মাটিতো কিছু পৰিমাণে সহ্য কৰিব পাৰে। উচ্চ উৰ্বৰতা আৰু ভাল নিষ্কাশন ব্যৱস্থা থকা বালিচহীয়া লোম মাটিৰ তলত খেতি কৰিলে ই সৰ্বোত্তম ফলাফল দিয়ে। ইয়াৰ বাবে ৬-৭ ৰ ভিতৰত pH ৰ প্ৰয়োজন হয় কেপচিকামৰ বাবে সৰ্বোত্তম।

মাটিৰ প্ৰস্তুতি: কেপচিকাম বাগিচাৰ বাবে পথাৰ ভালদৰে প্ৰস্তুত কৰিব লাগে। মাটিখিনি মিহিকৈ খেতি কৰিবলৈ হ'লে ৫-৬টা হাল বা তাৰ পিছত প্লেংকিং কৰিব লাগিব। মাটি প্ৰস্তুত কৰাৰ সময়ত মাটিৰ লগত FYM (Farm Yard Manure) বা পচন সাৰ মিহলাই লোৱা হয়।

বীজ সিঁচাৰ সময়: প্ৰধানকৈ অক্টোবৰ মাহৰ শেষত বীজ সিঁচা হয় আৰু ফেব্ৰুৱাৰী মাহৰ মাজভাগত ৰোপণ কৰা হয়। আগতীয়াকৈ উৎপাদনৰ বাবে অক্টোবৰ মাহৰ মাজভাগত বীজ সিঁচি নৱেম্বৰৰ শেষৰ ফালে ৰোপণ কৰা হয়।

ব্যৱধান: শাৰীৰ পৰা শাৰীৰ ব্যৱধান ৫০ চে.মি. আৰু গছৰ পৰা গছৰ পৰা ৪০ চে.মি.

বীজ সিঁচাৰ গভীৰতা: গভীৰতা ২-৪ চে.মি. বীজৰ হাৰ: এক একৰ মাটিৰ বাবে ২০০-৩০০ গ্ৰাম বীজৰ হাৰ ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে।

বীজ পৰিশোধন: বীজ বীজ সিঁচাৰ আগতে থিৰাম বা কেপ্তান, চেৰেছন আদিত @২গ্ৰাম/কিলোগ্ৰাম বীজত তিয়াই থ'ব লাগে যাতে বীজজনিত ৰোগৰ পৰা শস্যৰ পৰা ৰক্ষা পৰে।

নাৰ্চাৰী ব্যৱস্থাপনা আৰু প্ৰতিস্থাপন: কেপচিকাম খেতিৰ বাবে প্ৰথমে নাৰ্চাৰীৰ বিচনা ওপৰলৈ তুলি লোৱা হয়। পুলি ডাঙৰ কৰিবলৈ ৩০০ x ৬০ x ১৫ চে.মি.ৰ বীজ বিচনা প্ৰস্তুত কৰা হয়। উঠা নাৰ্চাৰীৰ বিচনাত বীজ সিঁচা হয় আৰু সিঁচাৰ পিছত নাৰ্চাৰীৰ বিচনাবোৰ মাটিৰ গোবৰৰ পাতল তৰপেৰে ঢাকি দিয়া হয়। বীজৰ অনুকূল অংকুৰণৰ বাবে উত্থাপিত বিচনাত বীজ সিঁচাৰ পিছত লঘু জলসিঞ্চনৰ প্ৰয়োজন হয়।

পুলিয়ে ৪-৫টা পাত পালে ৰোপণ কৰা হয়। প্ৰস্তুত কৰা পথাৰত ৰোপণ কৰা হয়। ডাৱৰীয়া বতৰত প্ৰধানকৈ সন্ধিয়া ৰোপণ কৰা হয়।

মূলত: ৫০-৬০টা পুৰণি পুলি ৰোপণৰ বাবে ব্যৱহাৰ কৰা হয়।

ৰোপণৰ আগতে নাৰ্চাৰীৰ বিচনাত পানী প্ৰয়োগ কৰিব লাগে যাতে পুলিবোৰ সহজে উভালিব পৰা যায়।

ৰাসায়নিক সাৰ প্ৰয়োগৰ মাত্ৰা আৰু সময়সীমা

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

লগতে প্ৰতি হেক্টৰত ৫০ কেজি মেগনেছিয়াম ছালফেট + ২৫ কেজি জিংক ছালফেট + ৫ কেজি ব'ৰন ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে।

ৰোগ আৰু কীট-পতংগ নিয়ন্ত্ৰণ: সাৰৰ লগতে প্ৰতি একৰত ফেৰটেৰা (ডুপণ্ড) ৪ কেজি বা ভাৰ্টিকো (Syngenta) ২.৫ কিলোগ্ৰাম প্ৰতি একৰত ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে। এই অনুপাতে ২১ দিনলৈকে কীট-পতংগ চুহি লোৱাৰ পৰা সুৰক্ষা প্ৰদান কৰে।

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraxnose	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ: শস্যৰ ভাল উৎপাদনৰ বাবে উপযুক্ত ব্যৱধানত অপতৃণ কাটিব লাগিব। ২-৩ সপ্তাহ ৰোপণৰ পিছত মাটিত স্থাপন কৰিলে পথাৰত অপতৃণ আঁতৰোৱাত সহায়ক হ'ব। প্ৰথমে অপতৃণ ৰোপণ কৰাৰ ৩০ দিনৰ পিছত কৰা হয় তাৰ পিছত দ্বিতীয়বাৰৰ বাবে অপতৃণ ৰোপণ কৰাৰ ৬০ দিনৰ পিছত কৰা হয়।

জলসিঞ্চন: বীজ সিঁচাৰ লগে লগে লঘু জলসিঞ্চন কৰা হয়। তাৰ পিছত ৰোপণ কৰাৰ লগে লগে পৰৱৰ্তী জলসিঞ্চন দিয়া হয়, আৰু তাৰ পিছত প্ৰয়োজন সাপেক্ষে পিছত জলসিঞ্চন কৰা হয়। শুষ্ক আৰু অৰ্ধশুষ্ক অঞ্চলত উপযুক্ত ব্যৱধানত জলসিঞ্চনৰ প্ৰয়োজন হয়।

চপোৱা; অপৰিপক্ক সেউজীয়া ফল চপোৱাৰ বাবে সাজু হয়। অপৰিপক্ক ফল কোমল আৰু খৰখৰীয়া যি চপোৱাৰ বাবে ভাল।

বি:দ্ৰ:- ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্ৰত কৰা পৰীক্ষাৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি দিয়া হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন জলবায়ু, মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে ওপৰৰ তথ্যসমূহ ভিন্ন হ'ব পাৰে।

ক্যাপসিকাম
হাইব্রিড/জাত: - আশ্চর্য -১

মাটি: এর জন্য ১৮-৩৫ ডিগ্রি সেলসিয়াসের মধ্যে আদর্শ মাটির তাপমাত্রা প্রয়োজন। এটি এঁটেল থেকে দোআঁশ মাটি পর্যন্ত সকল ধরনের মাটিতে জন্মে। এটি কিছুটা অম্লীয় মাটিতেও সহ্য করতে পারে। উচ্চ উর্বরতা এবং ভাল নিষ্কাশন ব্যবস্থা সহ বেলে দোআঁশ মাটিতে জন্মালে এটি সবচেয়ে ভালো ফল দেয়। ক্যাপসিকামের জন্য এর pH ৬-৭ এর মধ্যে থাকা সবচেয়ে ভালো।

জমি প্রস্তুতি: ক্যাপসিকাম চাষের জন্য, ক্ষেতগুলি ভালভাবে প্রস্তুত করা উচিত। মাটিকে সূক্ষ্মভাবে চাষ করার জন্য, ৫-৬টি চাষ এবং তারপরে প্লাঙ্কিং করতে হবে। জমি তৈরির সময় FYM (ফার্ম ইয়াড সার) বা কম্পোস্ট মাটির সাথে মিশ্রিত করা হয়।

বপনের সময়: বীজ মূলত অক্টোবর মাসের শেষের দিকে বপন করা হয় এবং ফেব্রুয়ারির মাঝামাঝি সময়ে রোপণ করা হয়। আগাম ফলনের জন্য, বীজ অক্টোবর মাসের মাঝামাঝি সময়ে বপন করা হয় এবং নভেম্বরের শেষের দিকে রোপণ করা হয়।

ব্যবধান: সারি থেকে সারি ব্যবধান ৫০ সেমি এবং গাছ থেকে গাছ ৪০ সেমি।

বপনের গভীরতা: গভীরতা ২-৪ সেমি হওয়া উচিত। বীজের হার: প্রতি একর জমিতে ২০০-৩০০ গ্রাম বীজ ব্যবহার করুন।

বীজ শোধন: বীজ বাহিত রোগ প্রতিরোধের জন্য বীজ বপনের আগে বীজ থিরাম বা ক্যাপ্টান, সেরেসান ইত্যাদিতে ২ গ্রাম / কেজি বীজ ভিজিয়ে রাখুন।

নার্সারি ব্যবস্থাপনা এবং রোপণ: ক্যাপসিকাম চাষের জন্য, প্রথমে নার্সারি বেড তোলা হয়। চারা জন্মানোর জন্য ৩০০ x ৬০ x ১৫ সেমি মাপের বীজতলা তৈরি করা হয়। উঁচু নার্সারি বেডে বীজ বপন করা হয় এবং বপনের পর মাটির পাতলা স্তর দিয়ে নার্সারি বেড ঢেকে দেওয়া হয়। বীজের সর্বোত্তম অঙ্কুরোদগমের জন্য উঁচু বেডে বীজ বপনের পর হালকা সেচ দেওয়া প্রয়োজন।

চারা ৪-৫টি পাতা ধারণ করলে চারা রোপণ করা হয়। প্রস্তুত জমিতে চারা রোপণ করা হয়। মেঘলা আবহাওয়ায় চারা রোপণ প্রধানত সন্ধ্যায় করা হয়। চারা রোপণের জন্য প্রধানত ৫০-৬০টি বয়সী চারা ব্যবহার করা হয়।

চারা রোপণের আগে নার্সারি বেডে জল দিন যাতে চারা সহজেই উপড়ে ফেলা যায়।

রাসায়নিক সার প্রয়োগের মাত্রা এবং সময়কাল

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

এছাড়াও ৫০ কেজি ম্যাগনেসিয়াম সালফেট + ২৫ কেজি জিঙ্ক সালফেট + ৫ কেজি বোরন প্রতি হেক্টর ব্যবহার করুন।

রোগ ও পোকামাকড় নিয়ন্ত্রণ: সারের পাশাপাশি, প্রতি একরে ফেরটেরা (ডুপল্ড) ৪ কেজি বা প্রতি একরে ভাটিকো (সিনজেন্টা) ২.৫ কেজি ব্যবহার করুন। এই অনুপাত ২১ দিনের জন্য শোষক পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা দেয়।

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraxnose	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

আগাছা নিয়ন্ত্রণ: ফসলের ভালো ফলনের জন্য, সঠিক বিরতিতে আগাছা পরিষ্কার করতে হবে। চারা রোপণের ২-৩ সপ্তাহ পর মাটি পরিষ্কার করলে ক্ষেত থেকে আগাছা অপসারণে সাহায্য করবে। চারা রোপণের ৩০ দিন পর প্রথম আগাছা পরিষ্কার করা হয় এবং চারা রোপণের ৬০ দিন পর দ্বিতীয় আগাছা পরিষ্কার করা হয়।

সেচ: বীজ বপনের পরপরই হালকা সেচ দেওয়া হয়। এরপর চারা রোপণের পরপরই পরবর্তী সেচ দেওয়া হয় এবং প্রয়োজনে পরবর্তীতে সেচ দেওয়া হয়। শুষ্ক ও আধা-শুষ্ক অঞ্চলে সঠিক বিরতিতে সেচ দেওয়া প্রয়োজন।

ফসল তোলা; অপরিপক্ক সবুজ ফল সংগ্রহের জন্য প্রস্তুত। অপরিপক্ক ফল নরম এবং খসখসে থাকে যা সংগ্রহের জন্য ভালো।

বিঃদ্রঃ- উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষার উপর ভিত্তি করে তৈরি। বিভিন্ন জায়গায় জলবায়ু, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরের তথ্য ভিন্ন হতে পারে।

ਕੈਪਸਿਕਮ
ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ/ਕਿਸਮਾਂ: - ਹੈਰਾਨੀ -1

ਮਿੱਟੀ: ਇਸਨੂੰ 18-35°C ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਇੱਕ ਆਦਰਸ਼ ਮਿੱਟੀ ਦਾ ਤਾਪਮਾਨ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਮਿੱਟੀ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਦੇਮਟ ਮਿੱਟੀ ਤੱਕ ਹਰ ਕਿਸਮ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਉਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਕੁਝ ਹੱਦ ਤੱਕ ਤੇਜ਼ਾਬੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸਹਿਣ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਉੱਚ ਉਪਜਾਊ ਸ਼ਕਤੀ ਅਤੇ ਚੰਗੀ ਨਿਕਾਸੀ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਵਾਲੀ ਰੇਤਲੀ ਦੇਮਟ ਮਿੱਟੀ ਦੇ ਹੇਠਾਂ ਉਗਾਉਣ 'ਤੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਨਤੀਜਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸਨੂੰ 6-7 ਤੱਕ pH ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਕੈਪਸਿਕਮ ਲਈ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਹੈ।

ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ: ਕੈਪਸਿਕਮ ਦੀ ਬਿਜਾਈ ਲਈ, ਖੇਤਾਂ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤਿਆਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ ਬਰੀਕ ਭੁਰਭੁਰਾ ਬਣਾਉਣ ਲਈ, 5-6 ਵਾਰ ਹਲ ਵਾਹੁਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਪਲੈਕਿੰਗ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਸਮੇਂ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ FYM (ਫਾਰਮ ਯਾਰਡ ਰੂੜੀ) ਜਾਂ ਖਾਦ ਮਿਲਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ: ਬੀਜ ਮੁੱਖ ਤੌਰ 'ਤੇ ਅਕਤੂਬਰ ਮਹੀਨੇ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਬੀਜੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਫਰਵਰੀ ਦੇ ਅੱਧ ਵਿੱਚ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਲਦੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਲਈ, ਬੀਜ ਅਕਤੂਬਰ ਮਹੀਨੇ ਦੇ ਅੱਧ ਵਿੱਚ ਬੀਜੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਨਵੰਬਰ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਫਾਸਲਾ: ਕਤਾਰਾਂ ਤੋਂ ਕਤਾਰਾਂ ਵਿੱਚ 50 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਅਤੇ ਪੌਦੇ ਤੋਂ ਪੌਦੇ ਵਿੱਚ 40 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦਾ ਫਾਸਲਾ ਵਰਤੋ।

ਬਿਜਾਈ ਦੀ ਡੂੰਘਾਈ: ਡੂੰਘਾਈ 2-4 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਬੀਜ ਦਰ: ਇੱਕ ਏਕੜ ਜ਼ਮੀਨ ਲਈ 200-300 ਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਦਰ ਵਰਤੋ।

ਬੀਜ ਉਪਚਾਰ: ਫਸਲਾਂ ਨੂੰ ਬੀਜ ਤੋਂ ਹੋਣ ਵਾਲੀਆਂ ਬਿਮਾਰੀਆਂ ਤੋਂ ਬਚਾਉਣ ਲਈ ਬੀਜਾਂ ਨੂੰ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਬੀਰਮ ਜਾਂ ਕੈਪਟਨ, ਸੇਰੇਸਨ ਆਦਿ ਵਿੱਚ 2 ਗ੍ਰਾਮ/ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜਾਂ ਵਿੱਚ ਭਿਓ ਦਿਓ।

ਨਰਸਰੀ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਅਤੇ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ: ਕੈਪਸਿਕਮ ਦੀ ਖੇਤੀ ਲਈ, ਨਰਸਰੀ ਬੈੱਡ ਪਹਿਲਾਂ ਉਗਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। 300 x 60 x 15 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੇ ਬੀਜ ਬੈੱਡ ਪੌਦੇ ਉਗਾਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਬੀਜ ਉੱਚੇ ਨਰਸਰੀ ਬੈੱਡਾਂ ਵਿੱਚ ਬੀਜੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਨਰਸਰੀ ਬੈੱਡਾਂ ਨੂੰ ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਖਾਦ ਦੀ ਪਤਲੀ ਪਰਤ ਨਾਲ ਢੱਕ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਬੀਜਾਂ ਦੇ ਅਨੁਕੂਲ ਉਗਣ ਲਈ ਬੀਜਾਂ ਨੂੰ ਉੱਚੇ ਬੈੱਡਾਂ ਵਿੱਚ ਬਿਜਾਈ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹਲਕੀ ਸਿੰਚਾਈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

ਜਦੋਂ ਪੌਦੇ 4-5 ਪੱਤੇ ਬਣ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਤਿਆਰ ਖੇਤਾਂ ਵਿੱਚ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਮੁੱਖ ਤੌਰ 'ਤੇ ਬੱਦਲਵਾਈ ਵਾਲੇ ਮੌਸਮ ਦੌਰਾਨ ਸ਼ਾਮ ਨੂੰ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਲਈ ਮੁੱਖ ਤੌਰ 'ਤੇ 50-60 ਪੁਰਾਣੇ ਪੌਦੇ ਵਰਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਕਰਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਨਰਸਰੀ ਬੈੱਡਾਂ 'ਤੇ ਪਾਣੀ ਪਾਓ ਤਾਂ ਜੋ ਪੌਦੇ ਨੂੰ ਆਸਾਨੀ ਨਾਲ ਪੁੱਟਿਆ ਜਾ ਸਕੇ।

ਰਸਾਇਣਕ ਖਾਦਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਦੀ ਖੁਰਾਕ ਅਤੇ ਮਿਆਦ

Sl.	Application Time	Nitrogen (kg/ha)	Phosphorus (kg/ha)	Potash (kg/ha)
1	10-12 days after transplanting	50	50	50
2	After 30 days	25	25	25
3	After 60 days	25	0	0

ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ 50 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਮੈਗਨੀਸ਼ੀਅਮ ਸਲਫੇਟ + 25 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਜ਼ਿੰਕ ਸਲਫੇਟ + 5 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੋਰਾਨ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰੋ।

ਰੋਗ ਅਤੇ ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ: ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ, ਫਰਟੇਰਾ (ਡੁਪੋਂਡ) 4 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰੋ। ਇਹ ਅਨੁਪਾਤ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਚੁਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ।

Sl.	Disease/Pest	Name of Chemical	Quantity per liter of water
1	Anthraxnose	Dithane M 45	2.5 gram per liter
2	Wilt	Carbendazim	01 gram per liter
3	Powdery mildew	Sulphur	02 gram per liter
4	Aphid/Thrips	Imidacloprid	04 ml per 10 liters
		Actra	06 gram per 15 liters
5	White fly	Lano	02 ml per liter
		Pegasus	01 gram per liter
6	Mite	Sulphur	02 gram per liter
		Magister	02 ml per liter
7	Fruit borer	Corajan	0.4 ml per liter

ਨਦੀਨ ਨਿਯੰਤਰਣ: ਫਸਲ ਦੀ ਚੰਗੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਲਈ, ਸਹੀ ਅੰਤਰਾਲਾਂ 'ਤੇ ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਨਿਕਾਸੀ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਕਰਨ ਤੋਂ 2-3 ਹਫ਼ਤਿਆਂ ਬਾਅਦ ਮਿੱਟੀ ਪੁੱਟਣ ਨਾਲ ਖੇਤਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਹਟਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮਦਦ ਮਿਲੇਗੀ। ਪਹਿਲੀ ਨਦੀਨ ਲਾਉਣ ਤੋਂ 30 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਫਿਰ ਦੂਜੀ ਨਦੀਨ ਲਾਉਣ ਤੋਂ 60 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਸਿੰਚਾਈ: ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਤੁਰੰਤ ਬਾਅਦ ਹਲਕੀ ਸਿੰਚਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਫਿਰ ਅਗਲੀ ਸਿੰਚਾਈ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟੇਸ਼ਨ ਤੋਂ ਤੁਰੰਤ ਬਾਅਦ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਅਤੇ ਫਿਰ ਲੋੜ ਪੈਣ 'ਤੇ ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਸਿੰਚਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਸੁੱਕੇ ਅਤੇ ਅਰਧ-ਸੁੱਕੇ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਸਹੀ ਅੰਤਰਾਲਾਂ 'ਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਕਟਾਈ: ਹਰੇ ਫਲ ਜੋ ਕੱਚੇ ਨਹੀਂ ਹਨ, ਕਟਾਈ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹਨ। ਕੱਚੇ ਫਲ ਨਰਮ ਅਤੇ ਕਰਿਸਪੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਜੋ ਕਟਾਈ ਲਈ ਵਧੀਆ ਹਨ।

ਨੋਟ:- ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੇਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿਖੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਜਲਵਾਯੂ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।